क्यों दाऊद परमेश्वर के हृदय को भाने वाला व्यक्ति था?

(प्रेरितों के काम 13:21-22)

“आख़िरकार उन्होंने राजा माँगा; परमेश्वर ने उन्हें किश के पुत्र शाऊल, बेन्यामीन के वंश का व्यक्ति, चालीस वर्षों तक दिया। 22 और जब परमेश्वर ने उसे हटाया, तब उन्होंने दाऊद को राजा बनवाया, और कहा, ‘मैंने यशे के पुत्र दाऊद को देखा, जो मेरे हृदय को भाने वाला व्यक्ति है और जो मेरी सारी इच्छाएँ पूरा करेगा।’”

हालांकि दाऊद उतने पूर्ण नहीं थे जितने कि उनके पूर्ववर्ती या मूसाह, समुएल, एलियाह या दानियेल जैसे सेवक थे, पर बाइबिल

उन्हें परमेश्वर के हृदय को भाने वाला बताती है।

परमेश्वर को दाऊद ने कैसे प्रसन्न किया?

1. पूरे हृदय से परमेश्वर पर विश्वास करना:
दाऊद ने किसी भी संकट के सामने डर नहीं दिखाया, बल्कि परमेश्वर की महिमा को उस संकट से बड़ा मानते हुए उस पर भरोसा किया। जैसा कि लिखा है:

भजन संहिता 27:1 – “यहोवा मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है,
मैं किससे डरूँ? यहोवा मेरी प्राण की दृढ़ गढ़ है, मैं किससे भयभीत होऊँ?”

जब दाऊद ग़ोलियाथ से लड़ रहे थे, तब भी उन्होंने उसके आकार या हथियारों से डर नहीं दिखाया, बल्कि कहा:

1 शमूएल 17:45-47 – “तुम मेरे पास तलवार, भाला और भाला लेकर आए हो, पर मैं तुम्हारे पास यहोवा सशस्त्र सेनाओं के नाम से आया हूँ, उस परमेश्वर के नाम से जिसे इज़राइल की सेनाओं ने स्तुत किया। आज यहोवा तुम्हें मेरे हाथ में मार डालेगा।”

हमारे जीवन में जब बड़े संकट आते हैं, तो क्या हम परमेश्वर से भागते हैं या उसी पर विश्वास रखते हैं? दाऊद ने यह दिखाया कि विश्वास से हम किसी भी संकट का सामना कर सकते हैं।

2. परमेश्वर के नियमों से प्रेम करना:
दाऊद ने परमेश्वर की वाणी को अपने जीवन का सर्वोच्च मूल्य माना:

भजन संहिता 119:47-48, 140 – “मैं तेरे आदेशों में अत्यंत आनन्दित होता हूँ, क्योंकि मैं उन्हें प्रेम करता हूँ। मैं अपने हाथों से अपने प्रेमित आदेशों को उठाऊँगा और दिन-रात
उनका मनन करूँगा। तेरी वाणी अत्यंत शुद्ध है, इसलिए तेरा
दास उसे प्रेम करता है।”

दाऊद केवल वचन पढ़ते नहीं थे, बल्कि दिन-रात उसका मनन करते थे। हमें भी अपने जीवन में पापों और गलत आदतों पर ध्यान देकर परमेश्वर के वचन में आनन्द लेना चाहिए।

3. अपने पापों को तुरंत स्वीकार करना और पश्चाताप करना:
जब दाऊद ने उरियाह की पत्नी के साथ पाप किया, नबी नथान के आगमन पर उन्होंने तुरंत स्वीकार किया:

2 शमूएल 12:13 – “दाऊद ने नबी नथान से कहा, ‘मैंने पाप
किया।’”
हमें भी अपने पापों को छिपाने के बजाय स्वीकार कर पश्चाताप करना चाहिए।

4. परमेश्वर की महिमा की घोषणा करने में न शर्माना:
दाऊद ने अपनी सारी शक्ति से परमेश्वर की स्तुति की, चाहे वह नृत्य करके हो या अपने कार्यों के माध्यम से।
भजन संहिता 119:46 – “मैं तेरे साक्ष्य को राजाओं के सामने घोषित करूँगा, और मुझे कोई लज्जा नहीं होगी।”

हमारे जीवन में भी हमें यीशु मसीह की महिमा को साहसपूर्वक घोषित करना चाहिए।

रोमियों 1:16 – “क्योंकि मैं इस सुसमाचार में लज्जित नहीं होता, क्योंकि यह विश्वास करने वालों के लिए परमेश्वर की शक्ति है, यहूदियों से भी और ग्रीकों से भी।”

परमेश्वर हमें भी हमारे विश्वास, वचन प्रेम, और पाप स्वीकार

करने की क्षमता दें, ताकि हम भी दाऊद की तरह परमेश्वर के हृदय को भा सकें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp